©2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 8 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

आधुनिक भारतीय लोकतन्त्र और पं0 दीन दयाल उपाध्याय के विचार

पूजा सिंह
शोधछात्रा राजनीति विज्ञान विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

''सबका साथ सबका विकास'' वर्तमान भारतीय सरकार द्वारा शुरू किया गया है जिनका उद्देश्य है कि हम पं0 दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चले और एक विकसित एवं न्यायपूर्ण भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए मिलकर काम करें, जहाँ सबसे गरीब व्यक्ति का भी ध्यान रखा जाए। जनसंघ और उसके उत्तराधिकारी के रूप में भारतीय जनता पार्टी आज पंडित दीनदयाल उपाध्याय के प्रेरणा पूर्ण जीवन और दर्शन पर चलते हुए देश की राजनीति का केन्द्रबिन्दु बन गयी है। ''सबका साथ सबका विकास'' में सर्वांगीण पुनर्रचना के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सबसे पहले आर्थिक असमानता, भेदभाव एवं विषमताओं को समाप्त करना उसका सबसे बड़ा लक्ष्य है।[1] ''सबका साथ सबका विकास'' में विकास के साथ–साथ समानता, स्वतंत्रता एवं गरिमापूर्ण जीवन की भावना भी है।

देश में आधारभूत सुविधाओं के प्रमुख मानक–सामाजिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा, आवास, पेयजल, स्वच्छता एवं शौचालय निर्माण, स्वास्थ्य एवं शिक्षा के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वर्तमान सरकार द्वारा अभूतपूर्व कदम उठाए हैं जो पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म–मानववाद दर्शन के उद्देश्यों के ''अन्त्योदय के सिद्धान्त के अनुसार गरीबों के कल्याण हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य करें''[2] अनुकूल है

वर्तमान सरकार ने देश में आर्थिक सशक्तिकरण के इन मानकों को प्राप्त करने के लिए जहाँ एक ओर आधार कानून के द्वारा व्यवस्था की पारदर्शिता को उत्तरदायी बनाया जा रहा है वहीं अनेक योजनाओं के द्वारा जैसे उज्जवला योजना, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना, स्वच्छता अभियान जैसे कार्यक्रमों में जनसहभगिता द्वारा देश में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हो रहा है। गरीब एवं वंचित वर्ग के आर्थिक समावेशन के लिए जन–धन अभियान एवं सभी वर्गों के लिए बीमा के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा की योजनाएं, अन्त्योदय की दिशा में मील का पत्थर सावित हो रही है सभी के लिए आवास एवं हर हाथ को काम, हर खेत के पानी के लक्ष्य को पंडित दीनदयाल जी के विचारों के अनुरूप प्राथमिकता प्रदान किया जा रहा है।[3]

भारतीय जनसंघ की स्थापना के बाद उसके कार्यक्रमों और उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए पंडित दीनदयाल जी ने अपने दर्शन में उस बात को भली–भांति प्रतिपादित किया कि जनसंघ का निर्माण केवल

राजनैतिक रिक्तता को भरने के लिए नहीं किया गया था, अपितु उसका उद्देश्य भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के आधार पर देश की सर्वांगीण पुनर्रचना करना था। उन्होंने अपने मामा को एक पत्र लिखा जिसमें था कि– ''समाज की उन्नति के बिना व्यक्ति का विकास असंभव है। यदि कुछ व्यक्ति समाज में उन्नत हो भी जाये तो उससे समाज को क्या लाभ होगा? वस्तुतः यह हानिकारक विकास होगा। आज समाज को हमारे जीवन की अपेक्षा है जिसे हमें पूर्ण करना है। ''सबका साथ सबका विकास'' में विकास के साथ समानता, स्वतंत्रता एवं गरिमापूर्ण जीवन की भावना भी है।[4] पंडित जी का मानना था कि 'सबको काम ही भारतीय अर्थनीति का एकमेव मूलाधार'– बेकारी की समस्या यद्यपि आज अपनी भीषणता के कारण अभिशाप बनकर हमारे सम्मुख खड़ी हैं, किन्तु उसका मूल हमारी आज के समाज अर्थनीति और व्यवस्थ में छिपा हुआ है, तात्पर्य यह है कि हमने किसी भी व्यक्ति के सम्बन्ध में बेकारी अथवा विहीनता की कल्पना नही की, अतः भारतीय अर्थनीति का आधार सबको काम ही हो सकता है बेकारी अभारतीय है भारतीय शासन का कर्तव्य है कि वह इस आधार को लेकर चले। वर्तमान भारतीय सरकार (भाजपा) दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों को आधार मानकर ''सबका साथ सबका विकास'' की बात कर रही है जिससे उसने समय–समय पर योजनाएं और कार्यक्रम चलाकर बेकारी जैसी समस्याओं को दूर करने का प्रयास कर रही है। भारतीय अर्थनीति का आधार सबको काम ही हो सकता है, को ध्यान में रखकर भारतीय जनता पार्टी ने अन्त्योदय की नीतियों को संकल्प के साथ लागू करने का प्रयास किया है। दीनदयाल अन्त्योदय योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण गरीबी को कम करना। इस योजना का उद्देश्य लक्ष्य शहरी गरीब परिवारों की गरीबी और जोखिम को कम करने के लिए उन्हें लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार उनको स्वावलंबी और क्षमतावान बनाना है। उस्ताद, स्किल इण्डिया जैसे कई कार्यक्रम इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए चलाये गये।

एकात्म–मानववाद के रूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारत को तत्कालीन राजनीति और समाज को उस दिशा में मुड़ने की सलाह दी है जो सौ फीसदी भारतीय है।[5] पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा था– वे लोग जिनके सामने रोजी–रोटी का सवाल है, जिन्हें न रहने के लिए मकान है न तन ढकने के लिए कपड़ा, उनको सुखी और सम्पन्न बनाना हमारा लक्ष्य है। उन्होंने आर्थिक लोकतंत्र का सिद्धान्त दिया उनका कहना था जिस प्रकार प्रत्येक वयस्क नागरिक को मतदान का अधिकार है, ठीक उसी तरह लोगों को कार्यै करने को मिलना चाहिए, उनको रोटी पैदा करने की ताकत देनी चाहिए, लोगों को सक्षम बनाना चाहिए ताकि वे अपनी जरूरतों को पूरा कर सकें। ''राजनीति उनके लिए साध्य नहीं, समाज सेवा का साधन मात्र थी।''[6]

पंडित जी का मानना था कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुए बिना राजनीतिक रूप से स्वतंत्र नहीं रह जा सकता है। स्टार्टअप, स्टैण्डअप, मेक इन इण्डिया, ''सबका साथ सबका विकास'' योजना आज इसी के

लिए तो आयी है। स्टार्टअप इण्डिया, स्टैण्डअप इण्डिया योजना वर्तमान सरकार द्वारा जनवरी 2016 में शुरू की जाने वाली योजनाएँ हैं। जिसके अन्तर्गत 10 लाख रूपये से 100 रूपये तक की सीमा में ऋणो के द्वारा अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति और महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को प्रोत्साहन दिया जाएगा। ''सबका साथ सबका विकास'' के तहत महत्वाकांक्षी योजना 'मेक इन इण्डिया' चलाया गया 2014 में भारत सरकार द्वारा देशी और विदेशी कम्पनियों द्वारा भारत में ही वस्तुओं के निर्माण पर बल देने के लिए, जिससे भारत में बड़ी संख्या में रोजगार के अवसर पैदा हों और अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिले जिससे भारत एक आत्मनिर्भर देश बने।[7]

पंडित दीनदयाल जी का ध्येय वाक्य ''चरैवेति–चरैवेति था, जो राजनीति में लगातार देश हित में काम करने का प्रेरणादायी आह्वान था जो देश हित की इच्छा में देशभक्ति के संकल्प के साथ समाज को एकात्मकता के भाव के साथ जोड़कर लगातार काम करने को प्रेरित करता है, उनका कहना था कि ''जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमनें हमेशा इनके पीछे छिपी एकता को खोजने का प्रयास किया है।''[8]. वस्तुतः प्रत्येक राष्ट्र के लिए 'स्व' का विचार करना आवश्यक होता है। स्वत्व के बिना स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं होता। आखिर प्रत्येक राष्ट्र अपनी प्रकृति के अनुसार प्रयास करते हुए सुखी और सम्पन्न जीवन व्यतीत कर सकने के लिए स्वतंत्रता की अभिलाषा रखता है। पंडित दीनदयाल जी के अनुसार भारतीय आदर्श ''वसुधैव कुटुम्बकम'' राष्ट्रीयता के साथ विश्वबन्धुत्व का भाव है।[9] वर्तमान सरकार इसी एकता को ''सबका साथ सबका विकास'' के साथ चलकर सम्भव बनाने का प्रयास कर रही है। पंडित दीनदयाल जी ने अपने राजनैतिक दर्शन में हमेशा राजनीतिक शुचिता के पालन को प्राथमिकता दी, यही ध्यान में रखकर वर्तमान सरकार भ्रष्टाचार मुक्त शासन के संकल्प को अपनी कार्यपद्धति में जोड़ा उसी के परिणामस्वरूप आज भारत की विश्व में साख में वृद्धि हुई है और जनता का शासन में विश्वास बढ़ा है! पंडित दीनदयाल जी का विचार था कि देश में समाज के हर व्यक्ति के जीवन में समाज के साथ आत्मीयता का होना नितान्त आवश्यक है इसके लिए उन्होंने कर्तव्य बोध पर बल दिया। सामाजिक न्याय के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सभी वर्गों में साधन, व्यक्तिगत गतिविधि एवं सामाजिक विशेषाधिकार के अवसरों का सम्मानपूर्वक बंटवारा होना चाहिए। वर्तमान सरकार पंडित दीनदयाल जी के विचारों के अनुरूप आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक स्वतंत्रता के सतत् कार्य कर रही है। देश के आर्थिक रूप से कमजोर, पिछड़े किसान, दलित एवं जनजाति वर्ग को विकास के साथ जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। पंडित जी का विचार था कि देश में समाज के हर व्यक्ति के जीवन में समाज के साथ आत्मीयता जरूर होना चाहिए। पंडित जी भारतीय विचार सहयोग एवं परस्पर पूरकता पर विश्वास करते हैं ''यह सबका साथ सबका विकास'' में एक साधन का काम करेगा। उनकी विचारधारा का मुख्य सोपान था उनका दिया 'एकात्ममानव–दर्शन' का सिद्धान्त जिसे आज भाजपा अपनी विचारधारा का आधार कहती है। ''यह सबका साथ सबका विकास'' जैसा नारा भी उन्हीं की 'अन्त्योदय' (समाज के अन्तिम व्यक्ति का उत्थान) की अवधारणा पर आधारित है।